ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय तथा शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 रेखा राणा

एसोसिएट प्रोफेसर
शिक्षा विभाग
मेरठ कॉलिज मेरठ, उ.प्र.

सारांशिका

मेरठ जिले के ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के स्नात्तक स्तर के विद्यार्थियों के आत्म–प्रत्यय तथा शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन हेतू प्रस्तुत शोध–पत्र में प्रयास किया गया है। न्यादर्श के रूप में 100 ग्रामीण क्षेत्र के तथा 100 शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों को चुना गया है। अध्ययन हेतू सर्वेक्षण विधि तथा आँकड़ों के एकत्रीकरण हेतू डा0 आर. पी. भटनागर निर्मित आत्म–प्रत्यय मापनी एवं 12वीं कक्षा का बोर्ड का परीक्षाफल शैक्षिक उपलब्धि हेतू प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण हेतू टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति हेतू परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया। शोध विश्लेषण के पश्चात यह पाया गया कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के आत्म प्रत्यय में अन्तर है तथा ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में शहरी विद्यार्थियों को शैक्षिक उपलब्धि अधिक पायी गई।

मुख्य शब्दः आत्म–प्रत्यय, शैक्षिक उपलब्धि, अध्ययन, योग्यताएं, व्यवहार

प्रस्तावना :

शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। यह शिक्षा घर, विद्यालय तथा अन्यान्य स्थानों पर होती रहती है। शिक्षा के माध्यम से होने वाले विकास के बल पर मनुष्य अपने व्यवहार तथा विचारों में परिवर्तन करता रहता है और जीवन की अनेक समस्याओं का समाधान करता है।

शिक्षा सामाजिक, राष्ट्रीय तथा चारित्रिक विकास का अंत्यन्त प्रभावशाली तथा उपयोगी साधन है इसी कारण प्रत्येक राष्ट्र व समाज का दायित्व है कि उत्तम शैक्षिक प्रक्रिया द्वारा नागरिकों में ज्ञान, समायोजन शीलता तथा आत्म – प्रत्यय आदि गुणों का विकास किया जाये जिससे उनमें कर्तव्य निर्वहन तथा उत्तरदायित्व की भावनायें विकसित हों सके।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात भारत शिक्षा के स्तर को ऊपर उठाने के प्रयास प्रारम्भ हो गये। विशेषतया कोठारी आयोग 1964–66, तदनन्तर 1968 की शिक्षा नीति एवं सन् 1986 की नवीन शिक्षा नीति के माध्यम से मूल्य शिक्षा पर बल दिया गया।

बालक के व्यक्तित्व में प्राकृतिक तथा वातावरणीय दोनों गुणों का समावेश होता है। अतः बालक की जन्मजात योग्यताओं के अलावा वातावरण भी बालक के विकास को प्रभावित करने का महत्वपूर्ण कारक है। शिक्षा द्वारा बालक के व्यक्तित्व को परिष्कृत करने का प्रयत्न ही नहीं किया जाता वरन् शिक्षा स्वयं की पहचान करने में भी सहायक सि(होती है। वातावरणीय अनुभव व शिक्षा प्रक्रिया बालक या व्यक्ति के आत्म–प्रत्यय को प्रभावित करती है।

आत्म–प्रत्यय व्यक्ति के व्यवहार एवं चिन्तन आदि को प्रभावित करता है। इसलिये आत्म–प्रत्यय का अर्थ एक व्यक्ति स्वंय के विषय में क्या अनुभव करता है या मत रखता है, से है। किसी भी व्यक्ति के व्यवहार के लिये आत्म–प्रत्यय एक महत्वपूर्ण कुंजी है।

षैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों द्वारा किये गये अधिगम व प्रयोग में लाये गये ज्ञान को मापने का प्रभावशाली साधन है।

कुमुद (2004) ने अभिप्रेरणा के उच्च स्तर को शैक्षिक उपलब्धि के लिये महत्वपूर्ण माना है जबकि लिंग व परिवेश का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

अध्ययन के उद्देश्य–

1. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों के आत्मप्रत्यय का अध्ययन करना।
2. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
3. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों के आत्मप्रत्यय की तुलना करना।
4. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना।

अध्ययन की शोध परिकल्पनायें –

1. ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों के आत्मप्रत्यय में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका नं0 – 1.1 ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मध्य आत्मप्रत्यय की विमाओं 'उपलब्धि' पर अन्तर की सार्थकतां

आत्मप्रत्यय की विमा	ग्रामीण विद्यार्थी (N = 100)		शहरी विद्यार्थी (N = 100)		टी–मूल्य
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
उपलब्धि	32.85	5.16	39.05	9.18	5.887''

01 स्तर पर सार्थक अन्तर है।

तालिका नं0 – 1.2 ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मध्य आत्मप्रत्यय की विमा 'आत्मविश्वास' पर अन्तर की सार्थकता

आत्मप्रत्यय की विमा	ग्रामीण विद्यार्थी (N = 100)		शहरी विद्यार्थी (N = 100)		टी–मूल्य
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
आत्मविश्वास	37.85	9.50	39.15	5.02	2.417''

.05 स्तर पर सार्थक अन्तर है।

तालिका नं0 – 1.3 ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मध्य आत्मप्रत्यय की विमा 'कार्य उपेक्षा' पर अन्तर की सार्थकता

आत्मप्रत्यय की विमा	ग्रामीण विद्यार्थी (N = 100)		शहरी विद्यार्थी (N = 100)		टी–मूल्य
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
कार्य उपेक्षा	28.93	6.65	33.42	4.48	6.22''

01 स्तर पर सार्थक अन्तर है।

तालिका नं0 – 1.4 ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मध्य आत्मप्रत्यय की विमा 'हीन भावना' की अनुभूति पर अन्तर की सार्थकता

आत्मप्रत्यय की विमा	ग्रामीण विद्यार्थी (N = 100)		शहरी विद्यार्थी (N = 100)		टी–मूल्य
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
हीन भावना की अनुभूति	38.98	5.30	33.17	6.96	6.64''

01 स्तर पर सार्थक अन्तर है।

तालिका नं0 – 1.5 ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मध्य आत्मप्रत्यय की विमा 'भावात्मक स्थायित्व' अनुभूति पर अन्तर की सार्थकता

आत्मप्रत्यय की विमा	ग्रामीण विद्यार्थी (N = 100)		शहरी विद्यार्थी (N = 100)		टी–मूल्य
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
भावात्मक स्थायित्व	37.68	8.50	35.20	5.25	2.49''

.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है।

तालिका नं0 – 2.0 ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मध्य 'शैक्षिक उपलब्धि' में अन्तर की सार्थकता

आत्मप्रत्यय की विमा	ग्रामीण विद्यार्थी (N = 100)		शहरी विद्यार्थी (N = 100)		टी–मूल्य
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
शैक्षिक उपलब्धि	282.00	60.82	334.37	57.32	6.27''

.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है।

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के आत्मप्रत्यय की विभिन्न विमाओं के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर प्राप्त परिणाम–

- ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों के मध्य आत्मप्रत्यय की विमा 'उपलब्धि' पर अध्ययन करने के पश्चात् यह निष्कर्ष निकला है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मध्य आत्मप्रत्यय की विमा उपलब्धि पर सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर है। इसका तात्पर्य यह है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में आत्मप्रत्यय की क्षमता उपलब्धि समान रूप से प्रभावी नहीं है।
- ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के आत्मप्रत्यय की विमा उपलब्धि के मध्यमानों का अध्ययन करने पर यह ज्ञात हुआ कि ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में शहरी विद्यार्थियों की उपलब्धि अधिक है।
- ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मध्य आत्मप्रत्यय की विमा आत्मविश्वास पर प्राप्त टी–मूल्य से निष्कर्ष निकलता है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मध्य आत्मप्रत्यय की क्षमता आत्म विश्वास पर सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर नहीं है। इसका अर्थ यह है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में आत्मप्रत्यय की विमा 'आत्म विश्वास' समान रूप से प्रभावी नहीं है।
- ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मध्य आत्मप्रत्यय की विमा आत्मविश्वास के मध्यमानों का अन्तर करने पर यह ज्ञात हुआ कि ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में शहरी विद्यार्थियों में अधिक आत्मविश्वास पाया गया।
- ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मध्य आत्मप्रत्यय की विमा कार्य उपेक्षा पर प्राप्त टी–मूल्य से निष्कर्ष निकलता है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मध्य आत्मप्रत्यय की विमा कार्य उपेक्षा पर सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर है। इसका अर्थ यह है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में आत्मप्रत्यय की विमा कार्य उपेक्षा समान रूप से प्रभावी नहीं है।
- ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के आत्मप्रत्यय की विमा कार्य उपेक्षा के मध्यमानों का अध्ययन करने पर स्पष्ट हुआ कि

ग्रामीण विद्यार्थियों के अपेक्षा शहरी विद्यार्थियों में वे कारण सक्रिय हैं जो कार्य उपेक्षा की प्रवृत्ति के लिए उत्तरदायी है।

- ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मध्य आत्मप्रत्यय की विमा हीन–भावना की अनुभूति पर प्राप्त टी–मूल्य से निष्कर्ष निकलता है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मध्य आत्मप्रत्यय की विमा हीन भावना की अनुभूति पर सार्थकता के दो स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर है इसका तात्पर्य यह है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में आत्मप्रत्यय की विमा हीन भावना की अनुभूति समान रूप से प्रभावी नहीं है।
- ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के आत्मप्रत्यय की विमा हीन–भावना की अनुभूति के मध्यमानों का अध्ययन करने से स्पष्ट हुआ, कि शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षा ग्रामीण विद्यार्थियों में हीन भावना की अनुभूति अधिक पायी गयी।
- ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मध्य आत्मप्रत्यय की विमा भावात्मक स्थायित्व का अध्ययन करने पर ज्ञात हुआ, कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में भावात्मक स्थायित्व लगभग एक समान है।

सन्दर्भ – ग्रन्थ सूची

- अग्रवाल, एस.के : शिक्षा के तात्विक सिद्धान्त राजेश पब्लिशिंग हाउस मेरठ, 24वाँ अंक 1996–1997
- भटनागर, सुरेश : शिक्षा मनोविज्ञान, मेरठ, मेरठ पब्लिशिंग हाउस, 1991
- गोयल, प्रतिभा एवं मिश्रा किरण : माध्यामिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों के आत्म–प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन, इन्टरनेशनल जरनल आफ रिसर्च पद सोशल साइन्सस, वोल्यूम, 9 मई 2019
- राजकुमार : तकनीकी शिक्षा सस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, अभिप्रेरणा तथा समायोजन पर प्रभाव का एक अध्ययन, पी.एच.डी. एजुकेशन, कोटा वि0वि0 कोटा
- सिंह, आर : https://shodhganotri.anflibnet>..... PDF
- https://mpbou.edu.in>slm>ded>defedn PDF